Vol. 8, Issue: 7, July: 2020
(IJRSML) ISSN: 2321 - 2853

मानवीय संवेदना और यथार्थ के धरातल को स्प”ा करती मार्कण्डेय की कहानियाँ

संजीव कुमार पाण्डेय
शोध छात्र, हिन्दी एवं भाषा विज्ञान विभाग
रानी दुर्गावती वि”वविद्यालय, जबलपुर (म0प्र0)

कहानी आधुनिक काल में बीसवीं सदी के पहले द”ाक से हिंदी में तीव्रगति से प्रवे”ा की ओर राष्ट्रीय आन्दोलन के दौरान लगभग पाँच द”ाक तक विविध अनुभूतियों, संवेदनाओं, मानवीय स्वभाव कार्यगति आदि की भावाभिव्यक्ति करती रही। इस पाँच द”ाक में प्रेमचंद, प्रसाद, साहित्य मनोविज्ञान के क्षेत्र में जैनेन्द्र, अज्ञेय, इलाचंद जो”ाी सक्रिय रहे। प्रगतिवाद के प्रारम्भ में प्रगति”ाील लेखक संघ के वैनर तले अमृतराय, प्रका”ाचंद्र गुप्त, भैरवप्रसाद गुप्त आदि लिख रहे थे। इन पाँच द”ाकों में प्रथम तीन द”ाक तक प्रेमचंद का ही प्रभाव रहा उनकी लगभग 350 कहानियाँ जीवन के विविध क्षेत्रों चूल्हे चौके से लेकर बाग–बगीचे, खेती–किसानी से लेकर मेले तीर्थ यात्राओं तक का प्रतिनिधित्व करती है। कहीं पर बालक हमीद है (ईदगाह), तो कही सवासेर गेहूँ का शंकर कुर्मी, कही पर हल्कू (पूस की रात) तो कहीं प्रसव से कराहती बुधिया (कफन)। कहानी कहने का ढंग और अंदाज में प्रेमचंद का कोई सानी नहीं, प्रसाद ने प्रेमचंद से इतर पौराणिक, ऐतिहासिक, सामाजिक दुनियाँ भी देखी। इतिहास पुराण से पात्रों को लेकर, राष्ट्रीय आन्दोलन में भागीदारी करने वाले लोगों के समक्ष एक कसौटी भी पे”ा की। जिनमें आमजन को आगाह करने का प्रयास किया गया। गुलेरी ने जहाँ अव्यक्त प्रेम (उसने कहा था) सुद”ार्न ने हृदय परिवर्तन (हार की जीत) जैसी श्रेष्ठतम कहानी लिखी, वही अज्ञेय (विपथगा) और जैनेन्द्र ने (खेल, फांसी, वातायन) मानवीय संवेदनाओं के लिए अपने स्त्रित्व की तला”ा करने का प्रयास किया। प्रगति”ाील लेखक संघ (1936) की स्थापना से एक नयी पीढ़ी कहानी के क्षेत्र में आयी। जिसमें प्रका”ाचंद गुप्त भैरवप्रसाद गुप्त, अमृतराय, य”ापाल, कमले”वर, अमरकांत की पीढ़ी थी।

आजादी के बाद कहानी का परिदृ”य बदला और कहानी की विषयवस्तु को लेकर लोगों में एक नये तरह का सृजनात्मक व्यक्तित्व दिखाई पड़ता है। क्योंकि स्वतंत्र भारत में जब सरकार बनी तो इसने उद्योग धंधों का विकास तीव्रगति से किया और नये–नये शहर विकसित होने लगे। अब कहानी प्रधानतः दो रूपों में दिखने लगी। (एक) ग्राम्यांचल और (दूसरा) शहरी वर्ग ग्राम्यांचल के कथाकारों में फणी”वरनाथ रेणु, मार्कण्डेय और ”िावप्रसाद सिंह आते हैं, जबकि शहरी वर्ग के कथाकारों ने कई कहानी आन्दोलनों को विकसित किया। जिनमें नयी कहानी, अकहानी, सचेतन कहानी, सहज कहानी, समांतर कहानी, सक्रिय कहानी और जनवादी कहानी आन्दोलन शुरू किया।

मार्कण्डेय ग्राम्यांचल के कथाकार हैं। वावजूद इसके इन्होंने उपर्युक्त कहानी की सीमाओं का अतिक्रमण कर 21वीं सदी के पहले द”ाक तक कहानियाँ लिखी। इस प्रकार लगभग छः द”ाक (60 वर्ष) तक इनके कहानी का कैनवस बनता है। मार्कण्डेय ने स्वयं लिखा है– ‘‘मैं आज नि”चयपूर्वक

कह सकता हूँ कि इस सारी परम्परा के भीतर से ही मेरे मन में लिखने की आकांक्षा पैदा हुई और मैंने सन् 1953 ई0 की गर्मियों में क्रम से चार कहानियाँ लिखी– 'गुलरा के बाबा', 'घूरा', 'पान–फूल' और 'नीम की टहनी'। इस प्रकार वे कहानी लेखन के क्षेत्र में प्रवे"ा कर चुके थे। परन्तु इससे पहले उनकी एक कविता 'पथ के रोड़े' अज्ञेय द्वारा संपादित 'प्रतीक' में प्रकाि"ात हो चुकी थी, जो उनके अनुसार उनकी सबसे पहली प्रकाि"ात रचना है।''[2]

मार्कण्डेय के कुल 'आठ कहानी संग्रह' है। जिनमें पहला कहानी संग्रह 'पानफूल' 1954 ई0 में प्रकाि"ात हुआ, यह नयी कविता आन्दोलन का वर्ष है, जहाँ नये मानव, लघुमानव की तला"ा हो रही थी। इस संग्रह में बारह कहानियाँ है जिनमें गुलरा के बाबा, बासवी की माँ, नीम की टहनी, सबरइयां, पानफूल, घूरा, रेखाएँ, रामलाल, संगीत, आँसू और इन्सान, मुं"ाी जी, सात बच्चों की माँ, कहानी के लिए नारी पात्र चाहिए। यह संग्रह नवहिन्द पब्लिके"ान, हैदराबाद से प्रकाि"ात हुआ था। इसकी भूमिका में मार्कण्डेय ने स्वयं कहा 'पान–फूल' का प्रथम संस्करण तीन वर्ष पहले, भाई बद्री वि"ाल की प्रेरणा से, नवहिन्द पब्लिके"ान, हैदराबाद ने छापा था तब से, इस लम्बी अवधि में, पाठकों एवं लेखक बन्धुओं ने इन कहानियों पर बड़ी रुचि से विचार–विम"ा किया है, मैं उन सबका हृदय से आभारी हूँ।''[3]

इस कहानी में गुलरा के बाबा, ठाकुर खानदान के सामंती वातावरण में पले एक पहलवान के व्यक्तित्व को गढ़ा है जो गुलरा बगीचे में रहते हैं। बाबा के अन्तरमन की संवेदनाओं को उनकी चारित्रिक दृढ़ता उदारता पर दुःख कातरता का वर्णन मार्कण्डेय ने किया है।

यो तो बाबा के व्यक्तित्व को सामान्य पाठक काल्पनिक व्यक्तित्व कह सकता है, लेकिन मार्कण्डेय ने उनके अन्दर की मानवीय संवेदना को किस प्रकार से प्रस्तुत किया है। वह इन पंक्तियों में देख सकते हैं– ''जब चैतुओं की टांग टूटी तब थाली परसी रही, पर बाबा रुके नहीं। वे यह काम तो जानते हैं– ''कितनी दूर–दूर के लोग उनके यहाँ हड्डियाँ बैठवाने आते हैं ? और छौड़ कर मन्ना साव की दुकान पर पहुँचे, 'अम्माहल्दी, चोट मुसब्बर, सेतखरी' पुड़िया बँध गयी। बाबा लेकर दौड़े। चाँदनी पिघलकर धरती पर पसर गयी थी। हवा के झोंके इस ओर से उस ओर चले जाते थे। बुवाई का समय, अब कहाँ है वह चाल ? बाबा सोचने लगे– कितनी अच्छा लड़ैत है। उस दिन कितना जोर लगाता था। झग्गा कोई मामूली पहलवान थोड़े ही है। दो मिनट में उसे दे मारा। अब तो गाँव का नाम यही रखे है।''[3]

इसी प्रकार 'बासवी की माँ' कहानी में नारी समस्या को एक बाल मनोविज्ञान के ढंग पर प्रस्तुत किया है। कहानी के जरिए पितृसत्तात्मक समाज में पुरुषों द्वारा नारियों पर किये जा रहे शोषण अन्याय व अत्याचार का कारुणिक चित्रण किया है। वे इस अन्याय, अत्याचार का प्रतिकार करते हैं। साथ ही नारी के त्याग और समर्पण तथा सेवावृत्त को उजागर भी करते हैं।

'नीम की टहनी' गाँव की जीवन रेखा बनी है। जिसमें ग्रामीण जनों में प्रचलित अज्ञान अंधवि"वास रूढ़ियों आदि को प्रस्तुत किया गया है।

'सबरैया' कहानी प्रेमचन्द के दो बैलों की कथा के ढंग पर है। वहाँ हीरा मोती दो बैल थे लेकिन यहाँ सबरैया ही बैल है। इसके इतर मानवेतर प्रेम संबंधों का भी अंकन किया गया है। 'पानफूल'

कहानी बाल–मनोविज्ञान पर आधारित है। इसे बाल–मनोविज्ञान कहे या मनुष्य और प"ाुओं के अन्योन्याश्रय संबंध क्योंकि 'नीली ठाकुर की बिटिया' है। रीतिया, ठाकुर की नौकरानी और 'पुसी' ठाकुर की कुतिया है जो एक–दूसरे को निरन्तर को सहारा देते है और एक दूसरे के सुख–दुःख में भागीदार हैं और विपत्ति में एक दूसरे की मददगार भी हैं।

दूसरा कहानी संग्रह 'महुएँ का पेड़' है जो 1955 ई0 में प्रकाि"ात हुआ। इसमें कुल 10 कहानी है– जूते, एक दिन की डायरी, नौ सौ रुपये और एक ऊँट दाना, साबुन, मिस शान्ता, महुए का पेड़, मन के मोड़, हरामी के बच्चे, मिट्‌टी का घोड़ा, अगली कहानी। इस संग्रह में ग्रामीण और शहरी दोनों परिवे"ाों को प्रस्तुत किया गया है। इसमें 'जूते' कहानी ग्रामीण परिवे"ा से संबंधित है और नव सौ (900) रुपये और 'एक ऊँट दाना' कहानी आजादी के बाद बदले ग्रामीण जीवन सन्दर्भ को उजागर करती है।

महुएँ का पेड़, मन का मोड़, हरामी के बच्चे ग्रामीण परिवारिक जीवन को उजागर करती है। 'हरामी के बच्चे' में उच्चवर्ग निम्नवर्ग किस प्रकार से एक विभाजक रेखा में है उसका जीवंत अंकन है। कहानी में मार्कण्डेय ने ग्राम्य संवेदनाओं को इस प्रकार से प्रस्तुत किया है कि शहरी संवेदनाएँ शहरी संवेदनाओं से अनुस्यूत हैं। एक दिन की डायरी कहानी लेखकीय जीवन को उजागर करती है कि लेखक भले ही नारी जीवन का चित्रण कर रहा है। लेकिन उसमें नारी की भावनाओं को समझने की क्षमता नहीं है।

'साबुन' कहानी स्वाधीन भारत के बेरोजगारों का जीवंत दस्तावेज है। यह बेरोजगारी किसी एक व्यक्ति या परिवार की नहीं है, अपितु उस पढ़े–लिखे समाज की है। क्योंकि गरीबी क्या से क्या कराती है उसका भी मनोविज्ञान प्रस्तुत किया है। ''गरीबी तेरे तीन नाम– झूठा, पाजी, बेईमान।''

मार्कण्डेय का तीसरा कहानी संग्रह 'हंसा जाई अकेला' है। यह संग्रह 1957 ई0 में प्रकाि"ात हुआ। 1956 ई0 में नयी कहानी आन्दोलन शुरू हो चुका था और द्वितीय आम चुनाव हो चुका था। दे"ा में एक एक नये प्रकार का परिदृ"य बना था। उस समय दे"ा की भयावहता को कैसे प्रस्तुत किया जाए उसमें लेखक का क्या दृष्टिकोण हो इसे प्रस्तुत करने के लिए मार्कण्डेय स्वयं कहते हैं– ''कलाकार की दृष्टि केवल सत्य को बतला देने में ही नहीं है। वह सत्य को सजीव बनाकर कुरुपता को भी सौन्दर्य से भर देता है। जहाँ एक ओर विज्ञान की प्रगति के साथ व्यवसाय के केन्द्रीयकरण और म"ाीन–युग के आगमन के कारण भूमि–हीन किसान की धरती में गड़ी हुई जड़ें उखड़ने का चित्रण कर प्रेमचंद ने किसान की दरिद्रता का हृदय–द्रावक खाका खींचा है, वहीं दूसरी ओर य"ापाल ने बाल–विवाह और पर्दे की थोड़ी प्रथा की संड़ाध पर पड़े हुए गलील नक़ाब को उठाकर हमें अपनी सामाजिक दुर्नीति पर शर्म से गड़ जाने के लिए मजबूर कर दिया है। प्रेमचंद ने जीवन के एक परिवर्तन होने वाले पहलू को देखा है तो य"ापाल ने केवल एक अनदेखे जीवन चित्र पर से पर्दा हटा दिया है।''[4]

इस संग्रह में कल्याणमल कहानी है जो स्वतंत्र भारत के गरीब किसान मजदूर के शोषण के समस्या को प्रमुखता से प्रस्तुत करता है। आजादी के बाद भूमि सुधार आन्दोलन जमींदारी उन्ममूलन जैसे विषय संविधान में प्रमुखता से रखे गये। लेकिन यथार्थ में समस्या का हल नहीं हो सका जमींदार ने अन्याय और शोषण जारी रखा। गरीब मजदूर की बेवसी लाचारी, मर्मान्तक पीड़ा को इसमें प्रस्तुत

किया गया। सोहगइला कहानी भारतीय जीवन खासतौर पूर्वांचल (उत्तर प्रदे"ा) बिहार के गाँवों में जो परम्परागत रूढ़ियाँ, मान्यताएँ, रीति–रिवाज है उन पर ये कहानी व्यंग्य करती है। 'दौने की पत्तियाँ' कहानी दे"ा के विकास हेतु चलाई जा रही योजनाएँ और भ्रष्ट राजनीति को चिढ़ाती हैं। क्योंकि विकास के नाम पर गाँव की आधार संरचना के निर्माण में किस प्रकार से भ्रष्टाचार होता है। किसी अमीर व्यक्ति की जमीन नहर में नहीं जा सकती, अपितु गरीब व्यक्ति ही शोषण का ि"ाकार होता है। इसे जीवंतता देने का प्रयास किया गया है।

इस संग्रह की श्रेष्ठतम् कहानी संग्रह 'हंसा जाई अकेला' है। इस कहानी में आजादी के बाद गाँव में राजनीतिक चेतना कैसे प्रवे"ा की है और गाँव की जिंदगी में किस प्रकार से परिवर्तन आया है। उसका वर्णन किया गया है। इसमें कहानी का नायक हंसा है जो गाँधी के विचारों का वाहक है। साथ ही कांग्रेस पार्टी का समर्पित प्रचारक भी है। इसमें कांग्रेस पार्टी की नेत्री सु"ाीला हैं, जो 'हंसा' को आधार देती है। चुनाव के प"चात सु"ाीला का बीमार होना, कांग्रेस की जीत, कांग्रेस के नेताओं द्वारा सु"ाीला की उपेक्षा, हंसा का सु"ाीला के प्रति अनुराग होना, फिर हंसा का पागल हो जाना ऐसा प्रतीत होता है कि यह मोहभंग की प्रक्रिया का प्रतीक है। डॉ0 पुष्पपाल सिंह ने लिखा है– 'हंसा का पागल हो जाना यह प्रतीकी कृत करता है कि आजादी की असली लड़ाई लड़ने वालों का हस्र यही हुआ है।

हंसा व्यक्ति नहीं व्यक्तित्व है और उस जैसे हजारों नवयुवक आजादी के बाद चुनावों में कांग्रेस के वाहक थे, लेकिन उन्हें क्या मिला ? मधुरे"ा के शब्दों में– ''इस कहानी का महत्व इसलिए है क्योंकि यह सारे परिवे"ागत और सामाजिक संदर्भों के बीच आदमी के अकेलेपन की नियति और पीड़ा को उभारती है। हंसा कहानी के जीवन से गहराई तक जुड़ी है। जिसमें लोकगीतात्मक छुवन के साथ गाँधी युग की भरपूर गमक भी है।''[5]

मार्कण्डेय का चौथा संग्रह 'भूदान' है। यह संग्रह 1958 ई0 में प्रका"ात हुआ। भूदान 1951 ई0 में बिनोवा भावे द्वारा चलाया हुआ गैर राजनीतिक स्वतः स्फूर्त आन्दोलन है, जो स्वेच्छा से भू को दान देने का पर्याय बना। इस संग्रह में कुल आठ कहानियाँ है। इसकी भूमिका मार्कण्डेय ने स्वयं लिखा– ''संयोग की बात है कि आर्थिक बोझ से दबे, थके हारे, शहरी, मध्य–वर्ग की नयी समस्याओं तथा वास्तविकताओं को समझने में असफल, स्वतः नियोजित नकली चरित्रों, ट्रिको अथवा संयोगात्मक अंतों द्वारा एक ठहरे और पिटे हुए यथार्थ की किस्सागोई छोड़ कर कुछ कथाकार 'सेक्स और फ्रस्ट्रे"ान' की ओर मात्र जो इन परिस्थितियों का स्वाभाविक अंतिम सुरक्षित स्थल है, झुक रहे, झुक रहे हैं। शहरी मध्यवर्ग के बहुसंख्यक 'अम्बि"ान्स' अपने वर्ग और उसकी आर्थिक परिस्थितियों के कारण इसी आत्महंसावृत्ति में निमग्न होते हैं, यह एक ऐतिहासिक सत्य है।''[6]

इसमें पहली कहानी 'माई' है जो प्रेमचंद के चार बेटों वाली विधवा का अनुसरण करती है। इसमें माँ की ममता अपार स्नेह वात्सल्य का कारुणिक एवं मार्मिक अंकन ळें दूसरी कहानी 'आद"ा कुक्कुट गृह' है, जो राष्ट्रीय विकास खण्ड के अन्तर्गत सरकार द्वारा चलाई गई विकास की योजनाओं का पर्दाफा"ा करती है। गरीबी निवारण के लिए सरकारी योजनाओं में किस प्रकार की धांधली है और बड़े अधिकारियों द्वारा उनसे किस प्रकार शोषणजन्य वर्ताव करती है उसका अंकन करती है।

'बिन्दी' कहानी जहाँ नारी जीवन की करुणगाथा है। वही शवसाधना ग्राम्य जीवन में फैले अंध वि"वास पाखण्ड और साधु–संन्यासियों के अनैतिक आचरण को भी प्रस्तुत करती है।

'दाना–भूसा' कहानी अभावग्रस्त ग्रामीण जीवन का यथार्थ चित्रण करती है कि एक परिवार जो भूख से बेहाल है वह बकरियों के सामने फेके गये आम की सूखी टहनियों को खाने लगता है। इससे बड़ी गरीबी की त्रासदी और क्या हो सकती है। ग्राम्य जनों की अभावग्रस्तता लाचारी दीनता और उस हेतु किये जा रहे संघर्ष का चित्रण भी कराती है।

'माही संग्रह' मार्कण्डेय का पाचवाँ संग्रह है। यह नया साहित्य प्रका"ान मिन्टो रोड, इलाहाबाद से 1962 ई0 में प्रका"ित हुआ। इस संग्रह में कुल आठ कहानियाँ हैं। इसका विषयवस्तु शहरी जीवन से संबंधित है। विवेकी राय के अनुसार इस समय दे"ा में तीसरा आम चुनाव हो चुका था और अकहानी आन्दोलन शुरू हो चुका था इसकी भूमिका में मार्कण्डेय ने लिखा– ''खु"ाी की बात है कि कहानी पर विचार–विम"ाा का तरीका बदल रहा है। सम्पन्न रुचि और गहरी समझ की माँग आज की कहानी करती है तो, सिर्फ इस कारण कि बदलते हुए जीवन के यथार्थ के प्रति लोगों को सजग करके, उनके सामने से भ्रम का कुहासा हटाना चाहती है। कहानी को नयी दि"ाा में विकसित करना तभी सम्भव है जब उसे समसामयिक जीवन के पूरे विकास के संदर्भ में वैज्ञानिक दृष्टि से देखा जाय।''[8]

इसमें दूध और दवा निम्न मध्यवर्गीय व्यक्ति के घर परिवार के आर्थिक संघर्ष का अंकन करती है और पक्षाघात कहानी भी मध्यवर्गीय जीवन और आधुनिक भाव–बोध को प्रस्तुत करती है, जबकि माही सतह की बातें, तारों का गुच्छा कहानी प्रेम संबंधों पर आधारित है। सूर्या कहानी में यौन, कुण्ठा, सेक्स की समस्या को प्रस्तुत किया गया है। जबकि आवाज कहानी स्वतंत्र भारत के अफसर"ााही के यथार्थ चित्र प्रस्तुत करती है।

मार्कण्डेय की कहानी का छठां संग्रह 1964 ई0 में सचेतन कहानी आन्दोलन के साथ शुरू हुआ। इस संग्रह में सात कहानियां हैं– अलग्योझा, माँ, ईदगाह, बेटों वाली विधवा, जो मार्कण्डेय के पुनः गाँव की ओर मुड़ने के विभिन्न परिदृ"यों का चित्रण करती है। मार्कण्डेय ने इसकी भूमिका में कहा है– परिवे"ा का पूरा अन्तर्भाव सहसा अपरिचित और अवि"वसनीय होता जा रहा है। ऐसी स्थिति में दे"ा की भयंकर गरीबी को बिना किसी अनुक्रमिक सुनि"चय तथा बिना किसी सार्थक उद्दे"य के बातों के हवाई गुब्बारों में भरकर छोड़ देना दे"ा को एक प्रकार की क्रूर शक्तियों के आगे सप्रेम परोस देता है, चाहे वह कोई बाहरी राष्ट्र हो, चाहे कोई मानवीय अन्ध चेतना। समाज के नैतिक ह्रास और सामूहिक उद्दे"यहीनता की स्थिति में गरीबी चेतना नहीं देती वरन् व्यक्ति को अवसरवादी, अन्ध और मृत्युगामी भी बनाती है।''[9] इसमें 'घुन' कहानी महाजन की शोषणवृत्ति और स्वार्थी नीति का यथार्थ अंकन है। जबकि 'आदमी की दुम' कहानी सामाजिक विकृत और दिखावेपन पर व्यंग्य करती है। 'आँखें' कहानी में आदमी के व्यवहार और मनः स्थिति का मनोवैज्ञानिक चरित्रांकन है। 'मधुपुर के सिवान का एक कोना' कहानी गाँव के सामंती वर्ग द्वारा गरीब मजदूरों पर होने वाले अन्याय एवं अत्याचारों को सामने लाती है। 'सहज और शुभ' कहानी में 'अन्धवि"वास' कहानी में सकुन अपसगुन का दृष्टांत भी है, जबकि 'कानी घोड़ी' गाँव के अमानवीय शोषण वृत्ति को स्पष्ट कर देती है। वही 'एक काला दायरा' कहानी भ्रष्ट समाज व्यवस्था के वास्तविक चरित्र को प्रस्तुत करती है।

'बीच के लोग' कहानी संग्रह 1975 ई0 में प्रकाि"ात हुआ। इस संग्रह में कुल छः कहानी हैं– 'लगड़ा दरबाजा', 'बादलों का टुकड़ा' 'बीच के लोग', 'बयान', 'गनेसी', 'प्रिया', 'सैनी' यह समानान्तर कहानी आन्दोलन के प्रारम्भ होने के बाद प्रकाि"ात हुआ। मार्कण्डेय ने इसकी भूमिका में कहा– ''जब आत्मानुभूति पर आधारित भाववादी अनुरक्ति का दबाव कहानी को यथार्थवादी मार्ग से विचलित कर रहा है। एक ओर सामाजिक संदर्भों की पहचान तथा व्याख्या क्षीण होकर सरलीकृत नारों में बदल रही है तो, दूसरी ओर कुत्सित सामाजिक चेतना के लेखक मजमून चुराने लगा था, समाज और क्रांति का नाम लेकर भ्रम पैदा करने की जी तोड़ कोि"ा कर रहे हैं। वस्तुतः लड़ाई अब सीमान्तों पर नहीं रचनात्मक चेतना के मूल केन्द्र में लड़ी जा रही है।''[10] इसमें लंग दरवाजा पहली कहानी है जो मध्य वर्ग की मानसिकता, उसकी जटिलताओं विव"ाताओं का चित्रण संवेदनात्मक धरातल पर शहरी परिवे"ा में प्रस्तुत की गयी है। 'बादलों का टुकड़ा' कहानी ग्रामीण खेतिहर मजदूरो से सम्बंधित है। जबकि गनेसी कहानी में परम्परागत रूढ़ियों, नैतिक मूल्यों, पुराने रूढ़िगत संस्कारों पर प्रहार करती है। 'बीच के लोग' कहानी यथार्थवादी है जो मार्कण्डेय के प्रगति"ाील दृष्टिकोण को प्रस्तुत करती है।

इधर 2012 में 'हलयोग' शीर्षक से मार्कण्डेय की असंकलित कहानियों को लोक भारती प्रका"ान ने प्रकाि"ात किया। जिसे आठवाँ कहानी संग्रह कह सकते हैं। मार्कण्डेय की कहानियों का समग्रतः मूल्यांकन किया जाए तो कहा जा सकता है कि ये कहानियाँ मानवीय संवेदना और यथार्थ के धरातल को स्प"ार् करती हैं। इनमें वर्तमान जीवन की कलुषता, जटिलता, संघर्ष, घुटन बिखरे हुए पुराने मूल्य और उभरते हुए नये मूल्यों की भी वाहक हैं। इसमें अपने परिवे"ा का ही न केवल सूक्ष्म अंकन करती है, अपितु इसका व्यापक चित्रण है। इसमें मानवीय संवेदनाओं को ग्रामीण परिवे"ा एवं नूतन शहरी परिवे"ा को भी प्रस्तुत करती हैं।

संदर्भ

1. मार्कण्डेय के साहित्य में ग्रामीण जीवन, डॉ0 गोरखनाथ किर्दत, पृ0 14, ए0बी0एस0 पब्लिके"ान, प्रथम संस्करण–273
2. मार्कण्डेय की कहानियाँ, मार्कण्डेय, भूमिका से, लोकभारती प्रका"ान, इलाहाबाद, द्वितीय संस्करण–2010
3. वही, पृ0 8
4. वही, पृ0 184
5. मार्कण्डेय के साहित्य में ग्रामीण जीवन, डॉ0 गोरखनाथ किर्दत, पृ0 43, ए0बी0एस0 पब्लिके"ान, प्रथम संस्करण–273
6. मार्कण्डेय की कहानियाँ, मार्कण्डेय, पृ0 250, लोकभारती प्रका"ान, इलाहाबाद, द्वितीय संस्करण–2010
7. वही, पृ0 323
8. वही, पृ0 401
9. वही, पृ0 441